Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 11, Issue 3&4 - 2026, Pg. No. 67-71
Peer Reviewed Journal

Review Article

# स्वामी श्रद्धानन्द का भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में योगदान: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अनीता गोस्वामी [1], सुमित कुमार [2]
[1] विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय, सरधना, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]शोध छात्र इतिहास विभाग, शहीद मंगल पांडेय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत
**DOI:** https://doi.org/10.24321/2456.0510.202621

## I N F O

**Corresponding Author:**
सुमित कुमार, इतिहास विभाग, शहीद मंगल पांडेय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत |
**E-mail Id:**
sumit9639130@gmail.com
**Orcid Id:**
https://orcid.org/0009-0000-7560-3891
**How to cite this article:**
अनीता गोस्वामी, सुमित कुमार, स्वामी श्रद्धानन्द का भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में योगदान: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, Anu: a, Mul, Int, Jour, *2026*; 11(3&4): 67-71.
Date of Submission: 2026-08-18
Date of Acceptance: 2026-09-29

## A B S T R A C T

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल राजनीतिक बहसों और प्रस्तावों तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि यह देशवासियों में आत्म-सम्मान, स्वदेशी एवं सामाजिक बराबरी की भावना उत्पन्न करने वाला एक व्यापक आन्दोलन था। भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा मुंशीराम ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के द्वारा देश के लोगों में देशप्रेम की भावना को जागृत किया। स्वामी जी ने देश के नागरिकों को अपनी प्राचीन संस्कृति पर गौरव करने का आह्वान किया, वहीं दूसरी ओर स्वामी जी ने देश को अंग्रेजों से आजादी दिलाने के लिए रौलेट एक्ट जैसे अधिनियमों का कड़ा विरोध और असहयोग आन्दोलन जैसी आन्दोलनों को पुरजोर समर्थन दिया। स्वामी श्रद्धानन्द ने 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' के माध्यम से उन हिन्दुओं को वापस हिन्दू धर्म में लेने का प्रयास किया जिन्होंने किसी दबाव या सामाजिक परिस्थिति के कारण कोई अन्य धर्म अपना लिया था। उन्होंने दिल्ली की जामा मस्जिद से अपने भाषण द्वारा हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द की एक नई मिसाल कायम की। स्वामी जी ने अनेक बार कांग्रेस और अन्य मंचों से, कमजोर और शोषित लोगों के हक के लिए आवाज उठाई।

**मुख्य शब्द:** स्वामी श्रद्धानन्द, गुरुकुल, स्वतंत्रता, आन्दोलन, अंग्रेज, स्वामी जी


*Copyright (c) 2026: Author(s). Published by Advanced Research Publications*

## प्रस्तावना

19वीं सदी के अंत एवं 20वीं सदी के शुरुआती दौर में भारत में राष्ट्रीय चेतना का उभार हो रहा था। स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों से बहुत प्रभावित थे और वे यह बात समझ चुके थे कि जब तक भारत के लोग अपनी सांस्कृतिक जड़ों से नहीं जुड़ेंगे और अंग्रेजी मानसिकता की गुलामी को नहीं छोड़ेंगे, तब तक वास्तविक आजादी नहीं मिलेगी। उनका स्पष्ट विचार था कि राजनीतिक स्वाधीनता की नींव सामाजिक सुधार और बेहतर शिक्षा पर ही रखी जानी है। स्वामी जी का जन्म फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी संवत 1913 विक्रमी (फरवरी 1856) को पंजाब के जालन्धर जिले के तलवन नामक ग्राम में खत्री परिवार में हुआ था।[1] इनके पिता का नाम नानकचन्द व माता का नाम नैना (नयन) देवी था। जन्म के समय इनका नाम बृहस्पति था लेकिन नामकरण संस्कार के बाद इनका नाम मुंशीराम रख दिया गया।[2] एक पाश्चात्य विचारक स्टीफन मैकडोनाल्ड ने स्वामी जी के जीवन परिचय के बारे में कहा था कि "वर्तमान काल का कोई कलाकार मुझे भगवान ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई जीवित मॉडल लेना चाहे तो मैं इस अद्भुत मूर्ति की ओर इशारा करूंगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सेंट पीटर के चित्र के लिए नमूना मांगे तो मैं इस जीवित मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा करूंगा।"[3] जब देश में नवजागरण का का शंख बज रहा था, दासता के बंधनों से स्वयं को मुक्त करने के लिए भारत माता करवट बदल रही थी, तभी अपने युग के प्रतिनिधि के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द का आविर्भाव हुआ। भारत के आधुनिक इतिहास में स्वामी जी का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। जहां एक ओर वे सुधारवाद के कर्णधार थे वहीं दूसरी ओर देश के नेताओं में उन्हें उच्च स्थान प्राप्त था। राष्ट्रीय भावना का विकास, समाज सुधार, स्वराज्य के लिए संघर्ष, पत्रकारिता आदि सभी के लिए उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। गुरुकुल-शिक्षा प्रणाली की पुनः स्थापना उनका एक ऐसा कार्य है जो भारत के सांस्कृतिक इतिहास में सदा स्मरण रहेगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के अनुसार चलने वाले विद्यालयों की चुनौती देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति की नींव रखी।[4] स्वामी जी देश के युवाओं की प्राचीन शिक्षा विद्याओं के साथ उन्हें आधुनिक ज्ञान प्राप्त हो इसके समर्थक थे। इसके लिए स्वामी जी ने हरिद्वार में 24 मार्च 1902 को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया। हरिद्वार में गुरुकुल की स्थापना का कार्य करना सरल नहीं था, इसके लिए स्वामी जी ने बहुत मेहनत की क्योंकि उस क्षेत्र में जो भी भूमि उन्हें गुरुकुल के लिए पसन्द आती थी या तो उसके दाम बहुत अधिक होते थे या फिर अन्य कारणों से उस भूमि का सौदा नहीं हो पाता था। अन्ततः नजीबाबाद के रईस स्वनामधन्य चौधरी मुन्शी जर्मन जी के मन में कुछ ऐसी पवित्र भावना पैदा हुई कि उन्होंने लगभग उसी स्थान पर, जो स्वामी जी के मन में बैठ चुका था, अपना कांगड़ी गांव और उसके आस-पास की सब 1200 बीघा जमीन उस पावन कार्य के लिए अर्पण करने का संकल्प कर लिया।[5] स्वामी जी प्राच्य विद्या के रक्षक और समर्थक थे, उन्होंने वेद, संस्कृत, दर्शन और पुरातत्व को अपने अध्ययन का विषय बनाया। वहीं दूसरी ओर गुरुकुल कांगड़ी भारतीय विद्यालयों में पहला ऐसा विद्यालय था

जहां विज्ञान का अध्ययन हिन्दी भाषा में शुरू हुआ।[6] स्वामी श्रद्धानन्द जी का मानना था कि विचारों की क्रान्ति ही राजनीतिक क्रान्ति की जननी होती है। इसलिए उन्होंने पहले पत्रिकाओं के द्वारा जन-जागरण का अभियान चलाया, जिनका उद्देश्य देश के लोगों को अपनी मातृभाषा हिन्दी के प्रति जागरूक करना और उन्हें अंग्रेजी शासन के विरुद्ध स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए तैयार करना था। स्वामी जी का स्पष्ट मानना था कि राष्ट्रीय शिक्षा का आधारभूत माध्यम मातृभाषा हिन्दी होनी चाहिए। इसके लिए उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा देश के युवाओं को तैयार किया जिन्होंने आगे आकर हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दिया।

स्वामी जी द्वारा निकाले गए कुछ प्रमुख समाचार पत्रों में 'सद्धर्म प्रचारक' एक प्रमुख समाचार पत्र था जो शुरुआत में उर्दू भाषा में निकाला गया था लेकिन बाद में हिन्दी भाषा में निकलने लगा। 'दि लिबरेटर' अंग्रेजी में प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र था जिसके माध्यम से स्वामी जी देश के युवकों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने भारत की आजादी की न्यायपूर्ण मांग रखते थे। इसी प्रकार अर्जुन और प्रज्ञा जैसे समाचार पत्रों के माध्यम से स्वामी जी ने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया और स्वदेशी अपनाओ आन्दोलन पर बल दिया। स्वामी जी के इन्हीं कार्यों और मातृभाषा के प्रति लगाव को देखकर एक बार महात्मा गांधी ने महामना पं. मदनमोहन मालवीय से कहा था,

"गंगा के किनारे हरिद्वार के जंगलों में गुरुकुल खोलकर जब स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दी के माध्यम से उच्च शिक्षा दे सकते हैं तो वाराणसी की गंगा किनारे बैठकर आप उन बच्चों को टेम्स का पानी क्यों पिला रहे हैं।"[7]

स्वामी श्रद्धानन्द का भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 1920 के आस-पास जितने भी संगठित राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक आन्दोलन हुए, उनमें स्वामी श्रद्धानन्द जी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। असहयोग आन्दोलन के प्रारम्भ से ही स्वामी जी ने अपने पत्र सद्धर्म प्रचारक के माध्यम से स्वदेशी अपनाओ का नारा दिया और ब्रिटिश शासन की संकीर्णता एवं उनकी नीतियों का कड़ा विरोध किया। उन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, देशी उद्योगों को बढ़ावा देना और राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। ब्रिटिश सरकार ने 1919 में भारतीयों के अधिकारों को कुचलने के लिए एक दमनकारी रौलेट एक्ट पारित किया, जिसका देश के अन्दर बड़े पैमाने पर विरोध हुआ। महात्मा गांधी ने उस एक्ट के विरोध में हड़ताल और सत्याग्रह का आह्वान किया। दिल्ली में इस सत्याग्रह को सफल बनाने की पूरी जिम्मेदारी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने हाथों ली। 30 मार्च 1919 को जब स्वामी जी के नेतृत्व में हजारों लोगों का जुलूस चांदनी चौक की ओर बढ़ रहा था तो अचानक कहीं से गोली पड़ी, जिस कारण सत्याग्रही भड़क उठे और तेजी से सिपाहियों की धरपकड़ करने लगे, जिससे सिपाही घबरा गये। यह सब देख

स्वामी जी ने लोगों को वहीं ठहरने का आग्रह किया और स्वयं आगे बढ़कर सिपाहियों के ठीक सामने जाकर खड़े हो गये और पूछा- "तुमने गोली क्यों चलाई?"

इस प्रश्न का कोई उत्तर न देकर सिपाहियों ने अपनी बन्दूकों की संगीन स्वामी जी की ओर करते हुए कहा, "हट जाओ नहीं तो हम छोड़ देंगे।"

किन्तु स्वामी जी सिपाहियों की उस चेतावनी से घबराये नहीं बल्कि एक कदम और आगे बढ़ गये। अब संगीन की नोक स्वामी जी की छाती को छू रही थी। स्वामी जी ने बहुत उच्च स्वर में कहा, "मार दो।"

यह दृश्य बस कुछ ही पल का था। इतने में एक अफसर दौड़ता हुआ आया और सिपाहियों ने बन्दूकें नीचे कर लीं। स्वामी जी ने अफसर से पूछा गोली क्यों चलाई, इस पर अफसर ने बहुत अस्पष्ट शब्दों में उत्तर दिया कि गोली भूल से चल गई थी।

उस समय की विषम परिस्थितियों में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जो साहस दिखाया वह अद्भुत था। उनके उसी साहस के कारण यह आन्दोलन पूर्ण रूप से चालू रह पाया और उसकी सफलता का श्रेय स्वामी श्रद्धानन्द जी को ही जाता है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में अपने योगदान के साथ-साथ अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये, उनमें से ही एक कार्य था हिन्दू-मुस्लिम के मध्य सौहार्द को बनाये रखने का उनका प्रयास। रौलेट एक्ट के विरोध में दिल्ली में हुई घटना में हिन्दू और मुस्लिम दोनों दोनों ही घायल हुए थे और कई की जान भी चली गई थी। लेकिन स्वामी जी ने जिस तरह इस आंदोलन को सफल बनाया उस से हिन्दू-मुस्लिम दोनों ही बहुत प्रभावित हुए थे। इसी वजह से दिल्ली के मुस्लिम नेताओं, हकीम अजमल खां और अन्य ने स्वामी श्रद्धानन्द को दिल्ली की जामा मस्जिद मस्जिद में तकरीर देने के लिये आमंत्रित किया।[8] यह शायद इतिहास में पहला अवसर था कि एक गैर-मुस्लिम ने जामा मस्जिद की वेदी पर खड़े होकर भाषण दिया। स्वामी जी ने वेद के मंत्र से अपना व्याख्यान प्रारम्भ किया और 'ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:' के साथ समापन किया। स्वामी जी ने कांग्रेस के मंच से मातृभाषा (हिन्दी) और दलितोद्धार का पक्ष भी रखा। उन्होंने कांग्रेस के इतिहास में पहली बार स्वागत भाषण अंग्रेजी में देने के स्थान पर पूरी तरह से हिन्दी में दिया। उनका मानना था कि आम जनता का आन्दोलन अंग्रेजी में नहीं चलाया जा सकता। उन्होंने मातृभाषा (हिन्दी) के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दिया। इसी प्रकार उन्होंने समाज के शोषित वर्गों के लोगों के उत्थान की लड़ाई लड़ी। स्वामी जी यह मानते थे कि समाज के पिछड़े और दलित वर्गों को बराबरी का अधिकार दिए बिना स्वतन्त्रता संग्राम नैतिक रूप से अधूरा है। स्वामी जी कहते थे कि जिस देश की एक तिहाई आबादी को अस्पृश्य मानकर दूर रखा जाता है, वह देश अंग्रेज़ों से स्वतंत्रता माँगने का हक़ खो देता है। इस प्रकार स्वामी जी ने स्वाधीनता और समाज के लिए अनेक सामाजिक कार्य किये। दिसम्बर 1926 में स्वामी जी बीमार पड़ गये

तब डॉक्टरों ने आराम करने की सलाह दी।[9] जब वे अपने बिस्तर पर आराम कर रहे थे तब अब्दुल लतीफ़ नामक एक मुस्लिम व्यक्ति उनसे मिलने आया जिसे उनके सेवकों ने मिलने से रोक दिया, परन्तु स्वामी जी ने उसकी आवाज सुनी और बीमारी की अवस्था में भी उससे मिलने के लिये तैयार हो गये। जब अब्दुल लतीफ़ स्वामी जी से मिला तो उसने स्वामी जी से इस्लाम धर्म पर बातचीत करने के लिए कहा। स्वामी जी ने लतीफ़ से तबियत थोड़ी सुधरने के बाद बातचीत करने के लिए कहा, किन्तु इसी दौरान अब्दुल लतीफ़ ने स्वामी जी को धोखे से एक के बाद एक तीन गोलियां मार दीं जिससे स्वामी जी ने वहीं प्राण त्याग दिये। और इस तरह देश ने एक देशप्रेमी, राष्ट्रभक्त, समाजसेवी एवं अटल व्यक्तित्व को खो दिया।[10]

## निष्कर्ष

स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान केवल एक राजनीतिक नेता का योगदान नहीं था, बल्कि वे एक युगदृष्टा थे। उन्होंने आजादी की लड़ाई को शिक्षा, सामाजिक न्याय, शुद्धिकरण और मेलजोल के साथ जोड़ा। रौलेट एक्ट के विरोध में दिल्ली में उनके द्वारा दिखाया गया साहस, जामा मस्जिद से दिया गया ऐतिहासिक भाषण, मातृभाषा हिन्दी के लिये उनके प्रयास और दलित समाज को मुख्यधारा से जोड़ने का उनका प्रयास आधुनिक भारतीय इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं। उनका जीवन यह संदेश देता है कि वास्तविक स्वाधीनता केवल सत्ता परिवर्तन में नहीं, बल्कि एक निर्भीक, शिक्षित और समावेशी समाज के निर्माण में निहित है।

# संदर्भ

1. श्रद्धानन्द, स्वामी, कल्याण मार्ग का पथिक, आत्मकथा, कर्मण्य कार्यालय, 1924, पृ॰ 1

2. वही, पृ॰ 2

3. भास्कर, डॉ. सुभाष, हिन्दी पत्रकारिता और स्वामी श्रद्धानन्द, सरस्वती साहित्य संस्था, दिल्ली, 2000, पृ॰ 14

4. वही, पृ॰ 15

5. विदयालकर, सत्यदेव, स्वामी श्रद्धानन्द, विजय पुस्तक भण्डार, दिल्ली, 1933, पृ॰ 300

6. भास्कर, डॉ. सुभाष, हिन्दी पत्रकारिता और स्वामी श्रद्धानन्द, सरस्वती साहित्य संस्था, दिल्ली, 2000, पृ॰ 199

7. भाकर, विष्णु, एवं राकेश, विष्णुदत्त, भारतीय साहित्य के निर्माता: स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, नई दिल्ली, साहित्य अकादमी, 1993, पृ॰ 63

8. विद्यावाचस्पति, श्री इन्द्र, मेरे पिता स्वामी श्रद्धानन्द, हरिद्वार, श्रद्धानन्द शोधसंस्थान प्रकाशन केन्द्र, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, 2008, पृ॰ 125

9. वही, पृ॰ 127

10. विदयालकर, सत्यदेव, स्वामी श्रद्धानन्द, दिल्ली, विजय पुस्तक भण्डार, 1933, पृ॰ 640

11. वही, पृ॰ 641